।। ॐ श्री साईनाथाय नमः।।
।। ॐ श्री सद्गुरुनाथ दादाय नमः।।

तत्वबोध

श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था **श्री साई शक 44**
नई दिल्ली **6 सितम्बर 2026**
अंक – 22

दिल्ली केंद्र – वर्धापन दिन

आज का दिन श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था के कार्यकाल का महत्त्वपूर्ण दिन है क्योंकि आज ही के शुभ दिवस पर 6 सितंबर 1999 में हमारे इस दिल्ली कार्यकेंद्र यानी साई निकेतन का शुभारंभ हुआ था। वं. दादा जी 1960–65 से दिल्ली में भक्तों के घर जाकर कामकाज करते थे। नवम्बर 1979 में वं. दादा जी ने कैलाश कॉलोनी में कार्यकेंद्र स्थानांतरित किया और फिर वहाँ से हम सभी 6 सितंबर 1999 में यहाँ साई निकेतन में आ गए।

श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था का अर्थ क्या है?

श्री – मतलब ज्ञान

साई – यानी बंधु। साईकल्प मतलब विश्वबंधुत्व की संकल्पना का युग (मानवता युग)।

आध्यात्म – मतलब खुद से यानी मानवीय जीवन से विश्व तक के सभी विषयों का अध्ययन करके ईश्वरीय आनंद की अनुभूति लेना।

संस्था – यानी हम सब आज इकठ्ठा होकर जो कर्त्तव्य करने की कोशिश कर रहे है वह।

हमें अपने जन्म का (जीवन का) ज्ञान होकर, जगत के सभी विषयों का तत्व और सत्व (अच्छा/बुरा) हम समझ पाए और परिवार से लेकर समाज, राष्ट्र एवं जगत के प्रति अपना दैनंदिन कर्त्तव्य यथायोग्य पद्धति से करके विश्वबंधुत्व की भावना निर्माण करने के लिए आवश्यक ज्ञान और शक्ति देने वाली संकल्पना मतलब श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था।

वं. दादा जी ने श्री साईनाथ महाराज जी के मार्गदर्शन से वर्ष 1956 में इस गुरुकार्य की स्थापना की। उत्तर भारत में इस कार्य का विकास श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था के माध्यम से वं. दादा जी की दुआ से हो रहा है। हमारे कार्यकेंद्र में देश–विदेश से सैकड़ों, हजारों भक्तभाविक आए है। हर व्यक्ति को अपनापन महसूस हो और वह सहजता से

पारमार्थिक मार्ग की ओर आकर्षित हो ऐसा यह स्थान है। वं. दादा जी एवं सभी दिव्य, पूण्य विभूतियाँ यहाँ पर शक्ति स्वरूप में उपस्थित है।

आज इस प्राप्त जन्म में श्री सद्‌गुरुनाथ दादा जैसे अलौकिक गुरु मिलना और जगतगुरु श्री साईनाथ महाराज एवं सभी दिव्य, पूण्य विभूतियों का आशीर्वाद प्राप्त होना इसके जैसा महत् भाग्य नहीं है। दिल्ली कार्यकेंद्र से जुड़े हुए सभी भक्त–भाविक, गुरुबंधु–भगिनी जिन्होंने अपना एकनिष्ठ भाव इस कार्य को अर्पण किया है उनका स्मरण करके शुक्रिया अदा करता हूँ और इसी प्रकार का सहकार्य और प्रेम इसके आगे भी आप सभी से इस कार्य को मिले यह प्रार्थना करता हूँ।

।। शुभम् भवतु।।